ISSN : 2395-0390

Varanasi MANAGEMENT Review

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal Related to Law, Literature, Commerce, Science, Social Science, Management, Communication and Medical

The Journal has been listed in 'UGC Approved List of Journals' with Journal No.-48402 in the previous list of UGC
IIFE Impact Factor - 3.215

Vol. V, No. 3

(July - Sept.) 2019

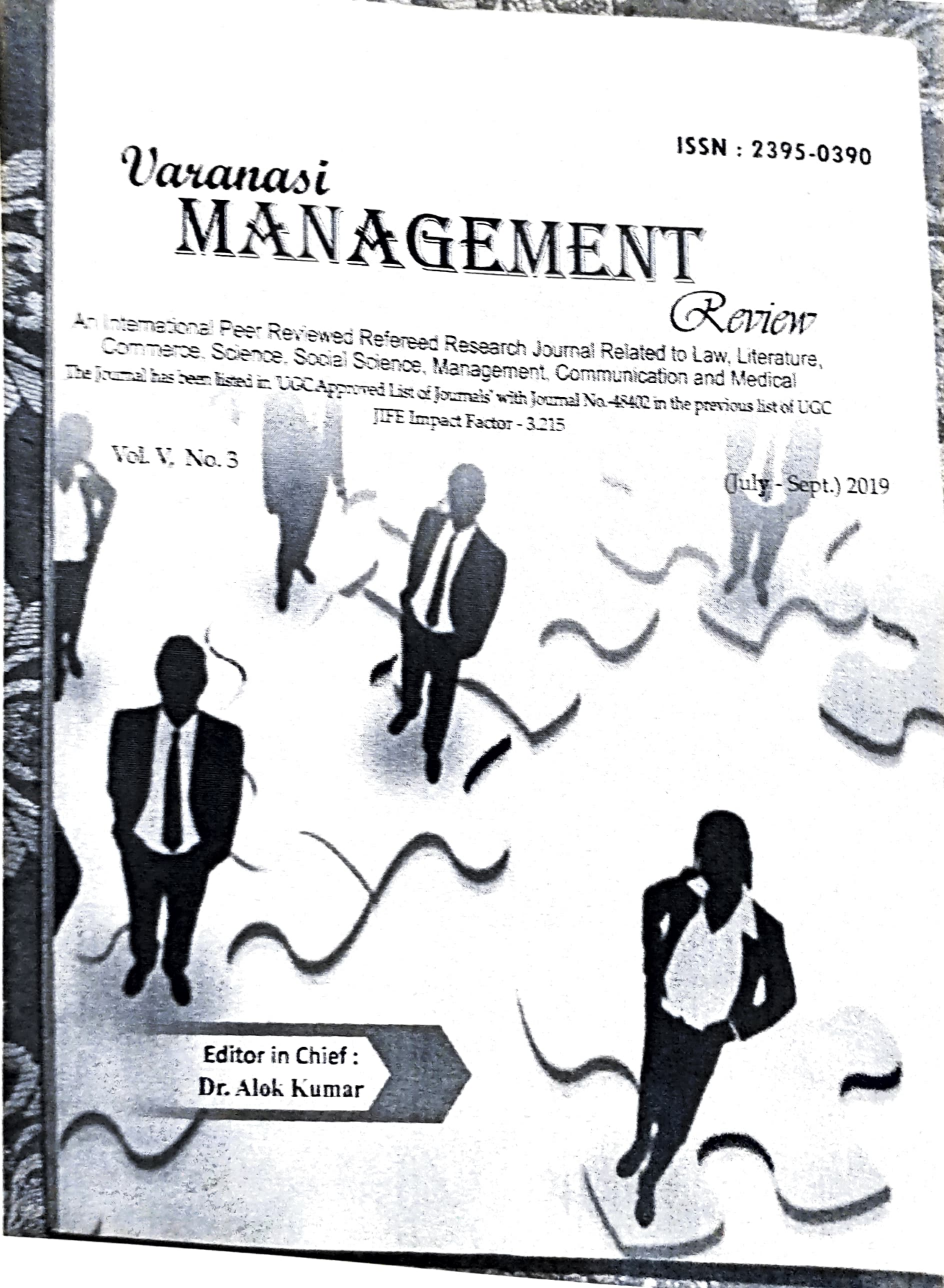

Editor in Chief :
Dr. Alok Kumar

Registration No. V-36244/2008-09 ISSN :- 2395-0390

The Journal has been listed in 'UGC Approved List of Journals' with Journal No. - 48402 in previous list of UGC

JIFE Impact Factor - 3.21

Varanasi Management Review

A Multidisciplinary Quarterly International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor in Chief
Dr. Alok Kumar
Associate Professor & Dean (R&D)
School of Management Sciences
Varanasi

Volume - V **No. - 3** **(July-Sept.) 2019**

Published by
Future Fact Society
Varanasi (U.P.) India

बौद्ध धर्म के उद्भव में लौह तकनीक की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन

अश्वनी कुमार यादव*
डॉ. विकास सिंह**

Abstract (सार)

इतिहासकारों का एक वर्ग बौद्ध धर्म की उत्पत्ति को लौह तकनीक के विकास के परिप्रेक्ष्य में देखता है। इन विद्वानो का मानना है कि लौह तकनीक के विकास से कृषि क्षेत्र के उत्पादन में गुणात्मक वृद्धि की। इस गुणात्मक वृद्धि ने अधिशेष उत्पादन को बल प्रदान किया और इसी अधिशेष उत्पादन ने नगरीय केन्द्रों के उद्भव में सहायता प्रदान की, जो कि दस्तकारी और व्यापार पर आधारित थे। इस बढ़ते नगरीकरण ने बहुत सारी सामाजिक, आर्थिक, समस्याओं को जन्म दिया, जिसके समाधान के रूप में बौद्ध धर्म का उद्भव हुआ।

इतिहासकारों का एक ऐसा वर्ग भी है जो बौद्ध धर्म की उत्पत्ति को, उत्तर वैदिक कालीन लौह तकनीक के विकास और नगरीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में देखता है। इन विद्वानों का मानना है कि उत्तरवैदिक कालीन लौह तकनीक के विकास से उत्पादन बढ़ा और समाज में गुणात्मक परिवर्तन आया तथा इस गुणात्मक परिवर्तन ने नगरीकरण को जन्म दिया। ये विद्वान कहते हैं कि लौह तकनीकि ने कृषि क्षेत्र के उत्पादन में गुणात्मक वृद्धि की। इस गुणात्मक वृद्धि ने अधिशेष उत्पादन को बल प्रदान किया और इसी अधिशेष उत्पादन ने नगरीय केन्द्रों के उद्भव में सहायता प्रदान की, जो कि दस्तकारी और व्यापार पर आधारित थे, का उद्भव हुआ। इस बढ़ते नगरीकरण ने बहुत सारी समस्याओं को जन्म दिया जिनका कि वैचारिक (सैद्धान्तिक) स्तर पर समाधान भी आवश्यक था ताकि कृषि का आधार और अधिक विस्तृत होता जाये और व्यापार – वाणिज्य फूले–फले। बुद्ध ने इन्ही कारणों से पशु हिंसा की निन्दा की तथा शिल्प, व्यापार और सूदखोरी आदि को वैधता प्रदान की। महात्मा बुद्ध ने असंबद्ध महिलाओं (alienated women) तथा सार्वजनिक भोजनालयों (Public eating houses) को सामाजिक मान्यता प्रदान की। आम जनता को बौद्ध धर्म की तरफ आकर्षित करने के लिए बौद्ध भिक्षुओं को स्पष्ट सलाह दी गयी थी कि वे ब्राह्मण पुरोहितों के आडम्बरपूर्ण, लोभी एवं असंयमी जीवन के विपरीत सादगीपूर्ण एवं पवित्र जीवन व्यतीत कर समाज में एक नैतिक प्रतिमान स्थापित करे। इस प्रकार लौह तकनीक के बढ़ते प्रयोग को बौद्ध धर्म के उद्भव एवं विकास के उत्तरदायी कारक के रूप में देखा जाता है। इसलिए इस परिकल्पना की जाँच परख करना यहाँ पर आवश्यक है।

सर्वप्रथम डी0डी0 कोसाम्बी[1] महोदय ने 1950 के दशक में बौद्ध धर्म के उद्भव व विकास में लोहे की भूमिका व इसके प्रयोग के महत्व की तरफ विद्वत जनों का ध्यान आकर्षित किया फिर उसके बाद कई विद्वानों ने इस मत का समर्थन किया और इसे आगे बढाया। और स्पष्ट किया कि बौद्ध धर्म के उद्भव व विकास में लौह तकनीक की भूमिका केन्द्रीय थी।

इस परिकल्पना के समर्थकों ने यह बताने का प्रयास किया कि छठी शदी ईसा पूर्व से आगे लौह उपकरणो ने मध्य गंगा घाटी में कृषि के साथ–साथ बस्ती या नगर की स्थापना हेतु घने जंगलों को साफ करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। ये विद्वतजन इस कार्य में आग की भूमिका को स्वीकार तो करते हैं परन्तु वे इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं कि जंगलों की सफाई में लौह उपकरणों की अपेक्षा किसी और चीज ने भी अग्रणी भूमिका निभाई। इस परिकल्पना के अनुसार, यदि आग का प्रयोग किया भी गया होगा, तो भी जली हुई वनस्पतियों के ठूँठों (Stumps) को हटाना संभव नहीं रहा होगा।[2] मध्य गंगा घाटी के क्षेत्र में यह भी देखने को मिलता है कि पेड़ों की जड़े क्षैतिज रूप से मिट्टी को पकड़े रहती है अतः जब तक इन जड़ों को कुल्हाड़ियों और कुदालियों से हटा न दिया जाय तब तक ये कृषि कार्य में बाधक ही बने रहेंगे। इस क्षेत्र में स्थित उत्तरी काली परिष्कृत मृदभांड (NBPW)[3] वाली बस्तियों की अपर्याप्त जनसंख्या पाषाण के औजारों से यह कार्य नहीं कर सकती थी। ऐसा भी दावा किया जाता है कि जब तक लोहे की कुल्हाड़ियो

* शोध छात्र (जे0आर0एफ0), प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0) E-mail - ashivanjaunpur@gmail.com, Mobile - 9169330421
** असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

12. सराओ के०टी०एस०, प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म : उद्भव, स्वरूप, एवं पतन, सी०बी०बी०ई०एफ०, ताइप, 2005, पृ० 72
13. तत्रैव, पृ० 72
14. घोष ए०, ऑब्जरवेशन ऑन चक्रवर्तीज पेपर, पुरातत्व 6, नई दिल्ली : इण्डियन ऑर्कियोलॉजिकल सोसाइटी 1972–73 : पृ० 35
15. घोष ए०, द सिटी इन अर्ली हिस्टोरिक इण्डिया, शिमला : इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी, 1973 : पृ० 10
16. चक्रवर्ती डी०के०, द स्टडी ऑफ आयरन एज इन इण्डिया, पुरातत्व नं० 13–14 नई दिल्ली : इण्डियन ऑर्कियोलॉजिकल सोसाइटी, 1984 : पृ० 85
17. बनर्जी एन०आर०, द आयरन एज ऑफ इण्डिया, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास, 1985 : पृ० 4–5, 224–226, फ्रैंक रेमण्ड आल्चिन एण्ड ब्रिजेट आल्चिन, द राइज ऑफ सिविलाइजेशन इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान, कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982 : पृ० 345
18. हबीब इरफान, एन एटलस ऑफ द मुगल एम्पायर, दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ० 41 और मैप 10बी
19. तत्रैव, पृ० 38 और मैप नम्बर्स 4बी, 6बी, 8बी, 9बी
20. लाल एम०, आयरन टूल, फारेस्ट क्लियरेंस एण्ड अर्बनाइजेशन इन द गैंगेटिक प्लेन्स, मैन एण्ड इन्वायरमेंट वाल्यूम 10 1986 : पृ० 85
21. तत्रैव, पृ० 86
22. चक्रवर्ती डी०के०, द स्टडी ऑफ आयरन एज इन इण्डिया, पुरातत्व, नं० 13–14, नई दिल्ली : इण्डियन आर्कियोलॉजिकल सोसाइटी, 1984 : पृ० 85
23. सराओ के०टी०एस०, प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म : उद्भव, स्वरूप एवं पतन, सी०बी०बी०ई०एफ०, ताइप, 2005, पृ० 76
24. तत्रैव, पृ० 77